ट्रेन का सफर

हम छिन्दवाड़ा मामा के घर जा रहे थे। सबसे पहले सामान पैक किया। फिर ट्रेन में खाने के लिए मम्मी ने खाना बनाया और पैक किया और जाने के लिए तैयार हुए। फिर पापा ने ऑटो बुलाया और सारा सामान ऑटो में रखा। फिर हम स्टेशन गए। स्टेशन जाने के बाद हमने टिकट निकाली और टिकट लेकर स्टेशन के अन्दर गए। वहाँ ट्रेन का इन्तज़ार किया। ट्रेन 1 घण्टा लेट थी। हमारी ट्रेन शाम 6 बजे की थी। पर वह 7 बजे आई। फिर हम ट्रेन में बैठे और ट्रेन 10 मिनट बाद स्टेशन से चली। फिर छोटे-छोटे गाँव आए। वहाँ पर 5-5 मिनट रुकती चली गई। गाँव के बीच में हमने जंगल देखा। जंगल में हमने कुछ जानवरों को देखा जैसे बन्दर, लौता, कुत्ता, गाय आदि। जंगल में बड़े-बड़े पेड़ देखे। फिर हमने नर्मदा नदी को देखा। हम नर्मदा नदी के पुल के ऊपर से जा रहे थे। नर्मदा नदी को हमने प्रणाम किया। फिर 5 मिनट में होशंगाबाद आया। उसके आधे घण्टे बाद इटारसी आया। इटारसी में हमने खाना खाया। और स्टेशन से केले लिए और खाए। फिर आधे घण्टे में 11 बज गए। फिर हम सो गए। परन्तु नींद नहीं आ रही थी क्योंकि बहुत आवाज़ आ रही थी।। इस तरह समय बीत गया और सुबह हो गई। सुबह के 5 बजे हम परासिया पहुँच गए। वहाँ स्टेशन पर चहल-पहल देखी। स्टेशन से आवाज़ आई, "लो चाय-चाय। समोसा ले लो।" और फिर ट्रेन चली। 1 घण्टे बाद छिन्दवाड़ा पहुँच गई। और स्टेशन पर टीटी ने टिकट चैक किया। फिर हम ऑटो से घर चले गए। इस तरह रहा हमारा ट्रेन का सफर। मामा के घर में बहुत खुश रहे। हम बहुत घूमे और फिर 1 महीने बाद फिर भोपाल आ गए।

—परिवेश पराडकर, चौथी, भोपाल, म. प्र.

—शिखा, चौथी, बनस्थली, राजस्थान

गहना बाज़ार

कितना है शोर यहाँ पर,
कितना है प्रदूषण यहाँ पर,
कितनी हैं गहनों की दुकानें यहाँ पर,
कितनी हैं गाड़ियाँ यहाँ पर।

ज्वैलर्स की राम-रहीम आदि अधिक दुकानें
हम अपनी दुकान में खरीदकर लाते हैं फुटानें
यहाँ लोग कर लेते हैं खरीदी का बजट पार,
इस जगह का नाम है सराफा बाज़ार।

—अनन्या जैन, छठी, इन्दौर, म. प्र.

एक दिन की बात

एक दिन मैं घूमने गई। मेरी बहन भी मेरे साथ गई। हमें एक लड़का मिला और हमने उससे पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? उसने जवाब नहीं दिया। हमने सोचा कि वो भूत था। हम भागकर अपने घर आ गए। हमने मम्मी को बताया कि हमारे घर के पास भूत है। वह बहुत घबरा गई। वह दौड़कर दरवाज़े तक गई और भूत को देखा। फिर हमने सोचा कि हम अपने भाई को बताएँ क्या हुआ? लेकिन हमारा भाई मिला ही नहीं। अचानक हमें लगा कि वो भूत कहीं हमारा भाई तो नहीं। और वो हमारा भाई ही था।

प्रेमा, 9 साल, पता नहीं लिखा

छोटी बिट्टी, सातवीं, पता नहीं लिखा

एक दिन एक मछुआरा नाव में जा रहा था। उसने मछली पकड़ने के लिए पानी में जाल उछाला। थोड़ी ही देर में जाल बहुत भारी हो गया। जाल खींचा तो उसने देखा जाल में मछलियों के बजाए गधे का बच्चा था। उसे अपने बेटे की याद आई। उसने घर से निकलते वक्त बताया था कि उसे खिलौना चाहिए।

मछुआरा गधे के बच्चे को घर ले गया और अपने बेटे को दे दिया। बेटा खिलौना पाकर बहुत खुश हुआ।

नचिकेत, पता नहीं लिखा

जगदेओ पोजारी, छठी, मुम्बई, महाराष्ट्र

मेरी कविता

पंछियों के पंख लेकर, मैं एक दिन उड़ जाऊँगी
पंछियों के पंख लेकर.....
मम्मी-पापा कह देती हूँ, मैं यह करके दिखाऊँगी।
पहाड़ की चोटी पर एक दिन मैं तुम्हें चढ़के दिखाऊँगी
पहाड़ की चोटी पर एक.....
मम्मी-पापा कह देती हूँ, मैं यह करके दिखाऊँगी।
एक दिन मैं चाँद पर जाकर सबका दिल बहलाऊँगी।
एक दिन मैं चाँद पर.....
मम्मी-पापा कह देती हूँ, मैं यह करके दिखाऊँगी।
पंछियों के पंख लेकर मैं एक दिन उड़ जाऊँगी।
तो हाँ, तो मैं तो पंख लेकर उड़ जाऊँगी और आप?
मम्मी-पापा जब आप तारे बन जाओगे
मम्मी-पापा जब.....
मैं पास आकर वो बातें कह जाऊँगी।
पंछियों के पंख लेकर, मैं एक दिन उड़ जाऊँगी।

कनई पटेल, चौथी, वैबास, म. प्र.

समृद्धि, एल. के. जी, पता नहीं लिखा

मैं हूँ वो हवा का झोंका

मैं हूँ वो हवा का झोंका
जो किसी के हाथ ना आए।
मुझमें है जादू ऐसा
जो हर किसी पर चल जाए।
हूँ नटखट पर हूँ सबका प्यारा
सब कहते हरदम मैं हूँ सबसे न्यारा।
जाने क्या बात है मुझमें
मुझको समझ ना आए।
अब तो यह नटखट-सा राहुल
हरदम सभी को भाए।
दोस्तों का दोस्त, यारों का यार
सभी के लिए मेरा प्यार।
प्यार करना ही सीखा मैंने
नफरत नहीं मुझको भाए।
अब तो यही दुआ है मेरी
ज़िंदगी यूँ ही गुज़र जाए।

—राहुल, आरुषि, भोपाल, म. प्र.

जंगल में रात

जंगल में रात
यहाँ कितना अँधेरा है
भूख भी लगी है
यहाँ खाने को कुछ नहीं मिलता है।
काश अभी हम घर में होते
वहाँ कितनी रोशनी होती।
सोने को मन करता है
नींद नहीं आती है
डर है कि शेर ना आ जाए।
वहाँ खाने को कुछ मिलता
टीवी देखते
पढ़ाई करते
काश अभी हम घर में होते।

—अभेय नाथ, तीसरी, गाज़ियाबाद, उ. प्र.

फोन किया चन्दा मामा को

मैंने पहली बार
इस संडे को आना मामा
मामीजी के साथ।
खुशियों की बरसातें होंगी
आसमान की बातें होंगी।
खूब करेंगे सैर-सपाटा
आप भी खाना गरम पराठा।

—रितिका गौर, पहली, भोपाल, म. प्र

— चित्र व कविता: ज्योति परसाई, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, गनेरा, होशंगाबाद